RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-05
Issue-01
January -2020

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[Peer Reviewed Journal]

वाजपेयी के तीन मुख्य विषय प्रेम या रति, मृत्यु या समयातीत तथाकथित सामाजिक सच्चाई

धीरेन्द्र मोहन मीना

शोधार्थी पी.एचडी, हिन्दी राजस्थान विश्वविद्यालय, बी–423, महेश नगर, जयपुर–302015

अशोक वाजपेयी के मुख्य रूप से तीन विषय रहे हैं। मदद यह मिलती है कि अपने बारे में खुद उन्होंने अपना विश्लेषण सामने रखा है– "मेरे लिए प्रेम या रति, मृत्यु या समयातीत किसी तथाकथित समाजिक सचाई से कम सचाई कभी नहीं रहे हैं। "बताए गए इस क्रम में वरीयता अपना मुंह दिखाती है। सबसे पहले 'प्रेम या रति', दूसरे क्रम में 'मृत्यु या समयातीत' और तीसरे क्रम में 'तथाकथित सामाजिक सचाई' आती है। सामाजिक सच्चाई 'तथाकथित' इसलिए हो गई है कि वर्ण–व्यवस्था में सब से ऊंचा स्थान घोषित करके ब्राह्मण घर में जन्मे, एक अशोक वाजपेयी की क्या, यह किसी भी ब्राह्मण की समस्या नहीं है। आखिर एक ब्राह्मण वर्ण का व्यक्ति चातुर्वर्ण्य की सामाजिकता में जो उसे मिली हुई है, उस से बड़ी और किसी सामाजिक ऊँचाई की कामना करेगा और लड़ेगा? इसलिए कवि ने इसे 'तथाकथित सामाजिक सचाई' कह कर एक सही पद का प्रयोग किया है। लेकिन यहाँ कवि इजाजत देंगे कि दलित के लिए 'सामाजिक सचाई' से पहले लगा विशेषण 'तथाकथित' हटा लिया जाएगा। कवि के इस कथन में अगला महत्वपूर्ण पद 'प्रेम या रति' का है। इस पद का इस समीक्षा–लेख में पहले कहा जा चुका है। आगे भी जहाँ अवसर मिलेगा यही कहा जाएगा कि कवि के लिए 'प्रेम या रति' में रति ही प्रमुख है। इस में आलोचना करने की आवश्यकता नहीं है कि यह कवि प्रेम नहीं कर सका। इस कवि को सम्मिलित करते हुए यहाँ लम्बी बात कही जा रही है कि ब्राह्म–विवाह की मजबूरी में कोई भी द्विज व्यक्ति प्रेम नहीं कर सकता। इस संस्कृति में केवल रति की अनुमति है, प्रेम की नहीं। यहाँ कवि के मास्टर कबीर की याद दिलाई जा सकती है कि 'प्रेम न बाड़ी उपजै प्रेम न हाट बिकाय।' इस के लिए द्विजों को अपने ब्राह्म–विवाह में परिवर्तन करके उसे ठीक करना पड़ेगा जो कभी सम्भव नहीं है।

इस छोटे उद्धरण में तीसरा प्रमुख पद 'मृत्यु या समयातीत' का है। बिलकुल माना जा सकता है कि यह कवि का बहुत प्रिय विषय है। यदि कवि को इस बात की शिकायत है कि उस की मृत्यु–सम्बन्धी कविताओं पर ध्यान नहीं दिया गया है तो यह उनकी एक वाजिब शिकायत है। अपने मृत्यु–सम्बन्धी विचारों के बारे में कवि ने सही लिखा है–"मुझे अक्सर प्रेम का, बहुत हुआ तो 'देह और गेह' का, कवि कह कर डिसमिस कर दिया जाता है। इस बात का पूरी तरह से नोटिस हीं नहीं लिया गया है कि मैंने मृत्यु और अनुपस्थिति पर, लोप और अवसान पर, प्रेम से कहीं अधिक कविताएँ लिखी है। मेरा कोई दावा तो नहीं है पर अब चार दशकों से अधिक की सृजन–सक्रियता के बाद इस ठोस तथ्य की ओर ध्यान दिलाना जरूरी है कि शयद इस दौरान बल्कि शायद हिन्दी में इस पूरी शताब्दी में इस थीम पर सब से अधिक कविताएँ मैने ही लिखी हैं। वे कैसी है और उनका समय में क्या हश्र होगा, यह और बात है। उन में से कई निराशा और अंधेरी कविताएँ भी है लेकिन मै यह उम्मीद करता हूँ कि ध्यान से पढ़ने पर कोई भी देख सकता है कि कुल मिला कर ये दरअसल जीवन से आसक्ति की, अदम्य जिजीविषा की रचनाएँ हैं।"

यहाँ कवि ने लिखा है कि शायद हिन्दी में इस पूरी शताब्दी में इस थीम पर सब से अधिक कविताएँ उसने ही लिखी हैं लेकिन उन के इस 'शायद' को निश्चयात्मक सबूत में बदल कर उस से भी ज्यादा सही बात कही जा सकती है कि आज तक किसी भी द्विज चिन्तक ने मृत्यु के बारे में इतनी विविधता से नहीं सोचा है जितनी विविधता से इस कवि ने सोचा है। सही बात है, पुनर्जन्म में अविश्वास करने वाली संस्कृति का कवि मृत्यु के बारे में एक लाख चौरासी योनियों के भय और उस से मोक्ष–प्राप्ति की कल्पना के सिवा दूसरी बात सोच भी क्या सकता है? लेकिन इस कवि ने द्विज संस्कृति में पहली बार मृत्यु को लख चौरासी योनियों के भय और मोक्ष्य प्राप्ति के संदर्भ के बिना सोच कर दिखाया है। यह कवि का अपनी संस्कृति के खोल से बाहर निकलने का साहस है। कहा जाना चाहिए कि वैचारिक स्तर पर यह पहली बार घटित हुआ है।

शुरू में कवि पुनर्जन्म में नहीं लेकिन पुनर्जन्म की शब्दावली की रौ में बह रहा था। एक गलत भाषाई वातावरण में उसे भी सब की तरह अपनी वापसी की लगी हुई थी। लेकिन इतना उसे तब भी शक था कि उस वापसी की पहचान नहीं हो पाएगी। उसने अपनी 'वापसी' शीर्षक की कविता में लिखा है:

"जब हम वापस आएंगे
तो पहचाने न जाएंगे –
.....
हम रूप बदल कर आएंगे
तुम बिना रूप बदले भी
बदल जाओगे–

RRIJM 2015, All Rights Reserved

.....
हमारी पहचान हमेशा के लिए गड्डमड्ड कर जाएगा
वह अन्त
जिस के बार हम वापस आएंगे
और पहचाने न जाएंगे।"

इसके बाद उस ने वापसी की रट लगानी छोड़ी और मृत्यु के अनन्तर ही कुछ बच रहने की आशा का अलख जगाने की कोशिश की। वह सोच रहा था कि वापस आना तो नहीं हो सकेगा लेकिन म ृत्यु में ही कुछ बचा रहेगा। इसी बचे रहने की मनौती करते हुए उसने लिखा था– "मृत्यु अन्त है पर उस के बाद भी जीवन है। सब कुछ समाप्त नहीं होता–कुछ तो बच ही जाता है। जीने की परम्परा इसी कुछ बचे हुए की ही तो परम्परा है"

असल में यह जीवन का मृत्यु से टकराना था। इस में कवि के विचार विकसित होते गए हैं। वापसी और कुछ बचे रहने की जिज्ञासा शान्त होने के बाद कवि जिजीविषा के चिन्तन पर आता है। वह लिखता है–"मृत्यु और अनुपस्थिति का जो ढाँकने लगा सिवाय इस के कि यह छाया जिजीविषा के किसी रास्ते को बाधित या धूमिल नहीं करती।" उस ने जो आश्चर्य देखा वह यह था–"...मृत्यु के बरक्स जीवन अपरे को इतनी तेजी से एसर्ट करता है कि हम भौंचक रह जाते हैं।" फिर उस की सोच एक मजबूत स्थिति में आती है–"...हम किसी हालत में मृत्यु से हार नहीं मानते।"

अपनी 'कुम्हार' नाम की कविता में अशोक वाजपेयी ने जनम को ले कर एक और प्रयोग किया है। वे लिखते हैं–"और मैं, पता नहीं अपने इस जनम के पहले से/पता नहीं कितनी देर से यहाँ बैठा हूँ।" निश्चित है, इसे पुनर्जन्म के सिद्धान्त में विश्वास रखने वाला कथन नहीं कहा जा सकता लेकिन यह भी सच है कि यहाँ कवि पुनर्जन्म के गड्ढे में गिरने की बाल–बल बचा है। एक बार को उस की आँखें अंधी हो ही गई थीं।

इस में कुछ भी बुरा नहीं है कि मनुष्य मृत्यु के बारे में तरह–तरह से साचे। अशोक वाजपेयी के कवि मन ने इस बारे में अनेक कल्पनाएँ की हैं। आखिर, हर मनुष्य को मृत्यु अपने निजी स्तर पर झेलनी होती है इसलिए दर्शनशास्त्र की एक परिभाषा यह भी है कि वह मृत्यु की तैयारी है। लेकिन हर सम्भव कल्पना की अनुमति के बावजूद झूठ पर रोक लगनी ही चाहिए। पुनर्जन्म के झूठ को नकारते हुए अशोक वाजपेयी मृत्यु से दो बातें करते हैं– "एक खिलौने की तरह/उठाएगी तुम्हें एक दिन मृत्यु/और बिना तोड़े जस का तस/रख देगी/वहाँ जहाँ सुनसान होगा।" कवि के पास इस सुनसान का एति–एति वाला कोई विशेषण नहीं है। वह नेति–नेति की भाषा में यह कह पाया है– "न रोशन है, न नीला, न नीरव'/देवताओं से दूर/और पृथ्वी–आकाश से/अछूता।" इसके सिवा कवि के पास एक और नजरिया है जो इन शब्दों में लिखा मिलता है–"हम चल देते हैं/छुप जाते हैं/ऋतु में, या काव्य में, या टहनियों के आकाश में...।" यह बिलकुल बंगाल के जादूगर सरकार महोदय वाली बात है जो एक दिन टी.वी. पर अपने इंटरव्यू में बता रहे थे कि जादूगर मरा नहीं करते, बस, गायब हुआ करते हैं। हाँ, यह गायब होना कवि के लिए ओझल हो जाना है जब वे कबीर की साखी काप्रयोग करते हुए लिखे हैं:

"हम रूखी–सूखी खा और ठण्डा पानी पी कर
चल पड़ते हैं
अनन्त की राह पर
और धीरे–धीरे दृश्य में
ओझल हो जाते हैं
कि कोई देख तो कह नहीं पाएगा
कि अभी कुछ देर पहले
हम थे।"

इस कवि की देवताओं से बिलकुल नहीं पटती। उन्होंने देवताओं को चालाकी भरे देखा है। वे देवताओं को कुछ समझें भी कैसे? बताइए, उन्हेांने देखा है कि 'गली के मोड़ पर/रखवाली करता देवता भी खिसक गया है/अवसर पा कर।' कहने का मतलब यह है कि कविता 'मै चला जाऊँगा' में कवि को ऐसे जाना है कि पीछे उस की कोई पहचान बाकी नहीं बचेगी–"किसी को याद भी नहीं रहेगा/कि अभी थोड़ी देर पहले/मैं था वहाँ।" यहाँ पुनर्जन्म का नाम तक नहीं है क्योंकि कवि लिखते हैं–"फिर मैं चला जाऊँगा/ऐसे कि जैसे कभी था ही नहीं।" यहाँ पुनर्जन्म तो कहाँ, जो जनम था, वह भी खत्म–खत्म हुआ सा है।

संदर्भ सूची

1. समीक्षा पत्रिका– जुलाई–सितम्बर 2016।
2. आलोचना के सौ बरस, तीनों भाग, अरविन्द त्रिपाठी, शिल्पायन, दिल्ली–प्रथम संस्करण, 2008
3. आधुनिक कवि : 23, अशोक वाजपेयी, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग, 12 सम्मेलन मार्ग, इलाहाबाद, प्रथम संस्करण, पृ. 19
4. वही, पृ. 20
5. वही, पृ. 66
6. वही, पृ. 16
7. वही, पृ. 31
8. वही, पृ. 34
9. वही, पृ. 35
10. गृहस्थ में कैसे रहें? स्वामी रामसुखदास, गोविन्द भवन कार्यालय, गीताप्रेस गोरखपुर, आठवां संस्करण, सम्वत 2049

RRIJM 2015, All Rights Reserved